कर्मवीर सिंह सूरी

ई—मेल-karamvirsuri@gmail.com

स्वैटर

दिसम्बर का महीना चल रहा है, काफी ठंड है। उस बैंक मैनेजर ने अपने चपरासी को स्वैटर के बिना आते देखा, तो उसको बड़ा रहम आया। उसने मन में सोचा कि अपना कोई पुराना स्वैटर उसे दे देना चाहिए, जो उसकी ढलती सिहत करके ढीला पड़ गया हो। वैसे भी वह कभी-कभार उसे कोई न कोई कपड़ा देता रहता था। उसने उसे आदेश दिया कि घर आकर वह स्वैटर ले जाए। मैनेजर दो महीने बाद रिटायर होने वाला था। जब वह दो-तीन दिन तक भी स्वैटर न लेने आया तो उसने एक बार दुबारा से उसे कहा। उधर उसने अपनी बीवी को भी कह रखा था कि स्वैटर उसे ही देना है, कहीं बर्तन वालों को न दे दे।

इस दौरान, महीना गुज़र गया पर वह स्वैटर लेने न ही आया। उसको उस पर बड़ी खुदक भी आ रही थी पर वह पहले की भांति रौब से भी न कह पाया। उसे पता था कि डूबते सूर्य को कोई सलाम नहीं करता तथा जाते समय क्यों कोई बदमज़गी पैदा करनी है। कशमकश उसके अंदर जरूर चलती रही।

पहली तारीख को उसने देखा कि चपरासी नया रेडीमेड स्वैटर डाले उसके आगे खड़ा था, जो उस ! पर काफी जंच रहा तथा सुंदर भी लग रहा था

हिन्दी अनुवाद : लेखक द्वारा स्वयं

पंजाबी मिन्नी कहानी (लघुकथा) की आलोचना पर कर्मवीर सिंह सूरी द्वारा लिखित दो पुस्तकें क्रमशः भाषा विभाग पंजाब द्वारा 'पंजाबी मिन्नी कहानी दा निकास ते विकास' और पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला द्वारा 'मिनी कहानी सरूप, सिद्धांत ते विकास' शीर्षक से प्रकाशित हुई हैं। कर्मवीर सिंह सूरी का पंजाबी लघुकथा विधा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। इनके पंजाबी में चार और हिन्दी में एक लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुका है तथा और भी कई पुस्तके प्रकाशित हुई है। इन्होंने 'रेनबो' नामक पुस्तक में पंजाबी लघुकथाओं का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया है।